औद्योगिक समस्याएँ

भूमिका – औद्योगिक एक बहुत विषयक कार्य होता है जो कई लोगों को रोजगार प्रदान करती है कई लोग उद्योगों में कार्य कर अपना जीवन यापन भी करते हैं। मानव कल्याण के प्रसाधन के रूप में अब उद्योगों के सामाजिक उद्देश्य भली भांति स्वीकार कर लिया गया है इसका अर्थ है काम करने के लिए अनुकूल ऐसी अवस्थाओं का सृजन जिनके अन्तर्गत उत्पादन को सुव्यवस्थित किया जा सके और उत्पादन के दो मुख्य प्रसाधनों पूंजी और श्रम के बीच होने वाली क्रिया – प्रतिक्रिया को प्रतिभाजित करने के लिए एक उपयुक्त सिद्धांत बन सके।

कारखाने की पुरानी व्यवस्था के अन्तर्गत पूंजी पति श्रमिकों के साथ एक विक्रय वस्तु की भांति व्यवहार करते हैं और वे पारश्रमिक काम के घंटे और नौकरी के प्रतिबंधों के लिए मांग एवं पूर्ति के नियम के अनुसार अनुशासित होते हैं।

औद्योगिक संबंधों का अर्थ केवल स्वामी श्रमिक का संबंध ही नहीं रहा अपितु वैयक्तिक संबंध सह-परामर्श समितियों के संयुक्त लेन-देन तथा इन संबंधों के निर्वाह कार्य में सरकार की भूमिका आदि सब कुछ है।

श्रमिक स्वामियों ने कृषक भूपति एक भिन्न जाति ही समझते थे धीरे धीरे उन्हें बोध हुआ कि उनकी व्यक्तिगत शक्ति कितनी अल्प थी। फिर उनकी स्थिति में और भी पतन हुआ। जब समाज पर भारी आर्थिक और सामाजिक परिवर्तनों के साथ लड़ा तब श्रम समस्याएं पैदा हुईं, कम वेतन लम्बी कार्य अवधि, खतरनाक काम और अपमानजनक पक्षपाती व्यवहार हिंसक मार और सामाजिक असुरक्षा के खतरे और भी बढ़ने लगी। औद्योगिक क्षेत्रों में दम घोंट धुआं रहा जाता है। परन्तु इस पर भी रोक लगाने वाला कोई नहीं है। भविष्य में यह लोगों में मुश्किल खड़ी करते जा रहे हैं फिर भी इस पर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है।

औद्योगिक समस्या के कारण

औद्योगिक समस्या के कारणों को दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है अर्थात् आन्तरिक कारण और बाहरी कारण।

आन्तरिक कारणों में वे कारक सम्मिलित हैं जो इकाई के भीतर जन्म लेते हैं तथा उत्पादन एवं वित्त आदि की भांति उन पर इकाई का नियंत्रण होता है।

दूसरी ओर वे कारक हैं जिनकी उत्पत्ति इकाई से बाहर होती है इन इकाइयों का उन पर कोई नियंत्रण नहीं होता, जैसे कच्चे माल की अनियमित उपलब्धता, बिजली की कटौती, बाजार में मंदी और सरकारी नीति आदि।

औद्योगिक समस्या का सबसे महत्वपूर्ण कारण त्रुटिपूर्ण प्रबंध है उत्पादन, विपणन, वित्त आदि क्षेत्रों में त्रुटिपूर्ण प्रबंधकीय निर्णय व्यापार को तबाह कर सकते हैं। कृषि और सामाजिक प्रबंधन का अभाव रख-रखाव के प्रबंध की ओर ज़रा ध्यान न देना आदि कुछ उत्पादन के प्रबंध में कुप्रबंध के उदाहरण हैं।

क्रियाशील पूंजी का अप्रयोग वित्तीय कुप्रबंध का कारण बन सकता है अनुचित वेतन, श्रम-शक्ति के आयोजन का अभाव तथा औद्योगिक सम्पर्क आदि कर्मचारी प्रबंधन की कुछ त्रुटियाँ हैं।

औद्योगिक समस्या के आंतरिक कारण

(I) प्रबंधकीय समस्याएँ - औद्योगिक समस्या का सबसे महत्वपूर्ण कारण त्रुटिपूर्ण प्रबंध है, उत्पादन, विपणन, वित्त आदि क्षेत्रों में त्रुटिपूर्ण प्रबंधकीय निर्णय व्यापार को तबाह कर सकते हैं श्रमिक और सामाजिक प्रबंधन का अभाव, स्व - स्वभाव के प्रबंध की ओर पूरा ध्यान न देना आदि कुछ उत्पादन के संबंध में कुप्रबंध के उदाहरण हैं। क्रियाशील पूंजी का प्रयोग वित्तीय कुप्रबंध का कारण बन सकता है अनुचित वेतन, श्रम शक्ति के आयोजन का अभाव तथा औद्योगिक सम्पर्क आदि कर्मचारी प्रबंधन की कुछ त्रुटियाँ हैं यही कारणों से औद्योगिक समस्याएँ होती हैं।

(II) त्रुटिपूर्ण प्लांट और मशीनरी

लघुस्तरीय क्षेत्र में बहुत से उद्यमी उपक्रम के लिए मशीनरी के चुनाव के संबंध में योग्य प्राधिकारियों से व्यावसायिक तथा तकनीकी सलाह नहीं लेते। फलतः प्लांट के लिए घटिया मशीनरी और घटिया साज - सामान इन उपक्रमों को भारी हानि का कारण बनते हैं तथा यह औद्योगिक समस्या पैदा कर सकती है।

(iii) श्रम समस्या : श्रमिकों की समस्या औद्योगिक समस्या का एक अन्य कारण है कुछ स्थितियों में गम्भीर श्रम-समस्याएँ, हड़तालों, तालाबंदियों और यहाँ तक कि औद्योगिक इकाइयों को बंद करने का कारण बनी है। ऐसी समस्याएँ प्रबंधकों को श्रमिकों के तन समस्या को, बोनस, श्रमिकों के संघों के बीच तनाव आदि विषयों के प्रति उदासीनता से उत्पन्न होती है यदि ऐसी समस्याओं का ठीक समय पर समाधान नहीं किया जाता तो औद्योगिक समस्या निश्चित रूप से जन्म लेगी।

(iv) स्थान का त्रुटिपूर्ण चुनाव :

बहुत से कारणों के फलस्वरूप औद्योगिक इकाई की स्थापना के लिए गलत स्थान चुनाव इसकी समस्या का कारण बनता है। उद्योगों की स्थापना के लिए बड़े भू-भाग की आवश्यकता होती है।

(v) उद्यमीय अदक्षता : बहुत से व्यक्ति औद्योगिक इकाई की स्थापना के योग्य नहीं होते क्योंकि उन्हें उत्पाद के संबंध में प्रबलता तकनीकी ज्ञान नहीं होता, वह उत्पाद की लागत नहीं जानते यहाँ तक कि उन्हें अपने व्यापार के खातों की देख रेख का ज्ञान नहीं होता।

(vi) कच्चे माल की पूर्ति न होना – कच्चे माल जैसे बिजली, परिवहन सुविधाओं आदि की उपलब्धता का न होना एक बाधा का कार्य करता है जिससे औद्योगिक उत्पादन की वृद्धि में रुकावट उत्पन्न होती है। संरचनात्मक और ऊर्जा संबंधी निवेशों जैसे परिवहन, विद्युत, ईंधन तेल और कोयले आदि का अभाव औद्योगिक समस्या को बढ़ाता है। इसके अतिरिक्त कच्चे माल की अपर्याप्तता के कारण भी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।

(vii) दुर्बल औद्योगिक संबंध : ~~बीमारियों~~ अनेक बीमार इकाइयों में औद्योगिक संबंधों की दुर्बलता के कारण भी अक्सर तालेबंदियाँ, हड़तालें व अनेक संघर्ष पाए जाते हैं जो एक सीमा के पश्चात संस्था की उन्नति के मार्ग में बाधा उत्पन्न कर सकती है।

(viii) वित्त का अभाव – औद्योगिक समस्या का एक अन्य कारण वित्त का अभाव भी है। अनेक नयी इकाइयाँ अल्प पूंजीकरण का शिकार होती हैं और इकाइयाँ अनुत्पादक पूंजीगत सम्पत्तियों में भारी निवेश कर देती हैं। अतः यह समस्या को और जटिल बना देते हैं।

औद्योगिक समस्या के बाहरी कारण

(i) बिजली संकट – बिजली की कमी औद्योगिक अस्फलता का मुख्य कारण है बहुत से औद्योगिक इकाईयों को बिजली का सामना करना पड़ता है। बिजली का उत्पादन इसकी वास्तविक आवश्यकता से बहुत कम होने के कारण राज्य सरकारें बिजली की कटौती का सहारा लेती है। बहुत से राज्यों में इससे की स्थिति की समस्या और भी गम्भीर हो जाती है।

(ii) आर्थिक बाधाएँ – कृत्रिम आर्थिक बाधाएँ बढ़ती हुई औद्योगिक समस्या को बढ़ाने में सहायक बनती है सरकार उत्पाद मिश्रण पर नियंत्रण रखती है तथा कीमतें कुछ उद्योगों में गम्भीर समस्याएँ पैदा करती है। अतः कीमत नियंत्रण और कठोर वित्तीय नियंत्रण औद्योगिक क्षेत्र की स्वस्थ वृद्धि में कठिनाईयाँ उत्पन्न करता है।

(iii) श्रमिक अशान्ति : श्रमिक श्रेणी में अशांति कम उत्पादन के लिए उत्तरदायी है। तथा औद्योगिक समस्या को जन्म देते हैं। अन्तः संघीय स्पर्धा व व्यापार संघों का राजनीतिकरण और सामाजिक सुरक्षा उपायों से इंकार आदि ने औद्योगिक

परिदृश्य को प्रतिकूल प्रभावित किया है इन कारकों के कारण समस्या है एक ऐसे देश में आर्थिक परिणाम बहुत अधिक होते हैं जहाँ बेरोजगारी एक महान जोखिम है तथा संसाधन दुर्लभ है

(iv) संरचना की समस्या – ऊर्जा, बिजली ईंधन, तेल आदि का अभाव भी औद्योगिक समस्या उत्पन्न करती है।

(v) आर्थिक शिथिलता या मंदी :

इनकी आशंकाएँ उस प्रकार के उद्योगों में अधिक होती हैं जिनके द्वारा उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं की मांग लोचपूर्ण होती है जैसे रासायनिक उद्योग, इंजीनियरिंग उद्योग, इलेक्ट्रॉनिक उद्योग आदि। इन उद्योग की माँग एवं पूर्ति के संतुलन में थोड़ा सा भी अंतर आने पर बिक्री घटने लगती है। कुटीर एवं लघु उद्योगों तथा हस्तशिल्प की कलात्मक वस्तुओं का उत्पादन करने वाली औद्योगिक इकाइयों की दशा में भी ऐसी आशंकाएँ अधिक रहती है।

(vi) शक्ति संकट : औद्योगिक समस्या बढ़ने का एक अन्य कारण शक्ति संकट भी है भारत में बिजली, कोयला, एवं तेल की माँग में औद्योगिकरण के साथ साथ तीव्रता से वृद्धि हुई है जबकि इनकी पूर्ति

में वृद्धि की दर उस अनुपात में नहीं बढ़ सकती है फलतः पूँजी का संकट बना रहना एक साधारण समस्या है जिसके कारण उद्योगों की स्थापित क्षमताओं का पूरा उपयोग नहीं किया जाता है उत्पादन स्तर नीचे गिरने लगता है और उपक्रम को हानि होने लगती है।

(vii) अन्तर्राष्ट्रीय बाजारों में परिवर्तन

अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में होने वाले परिवर्तनों के कारण भी औद्योगिक समस्या में अधिकता हो सकती है। पिछले वर्षों में ऐसे अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर अनेक परिवर्तन हुए हैं जैसे तेल के मूल्यों में अप्रत्याशित वृद्धि, आयात-निर्यातों पर रोक, विकसित देशों द्वारा अपनायी जाने वाली संरक्षण की नीति, पहले से मिलती आ रही विदेशी सहायता में किन्हीं कारणों से एकाएक कमी अथवा उस पर पूर्ण रोक आदि। बहुराष्ट्रीय निगमों द्वारा अपनायी जाने वाली नीतियों के कारण भी किसी देश के उद्योगों के समक्ष संकट उत्पन्न हो सकता है।

---x---x---